

By:-
Sunita Kumari
Deptt. of History
J. N. College Madhubani

B. H. History (H)
CLASSMATE
Degree - I
Date
Paper - I

गौतम बुद्ध के जीवन और उपदेशों पर प्रकाश डालें :-

(Discuss the life and teaching of Gautam Buddha.)

- महात्मा बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। इनके वचन का नाम सिद्धार्थ था। इनके पिता का नाम शुद्धोदन और माता का नाम माया देवी था। शुद्धोदन नेपाल की तराई में स्थित शाक्य वंश के राजा थे। शाक्यों की राजधानी कापिलवस्तु थी। प्रौढावस्था में 563 ई० पूर्व माया देवी के यहाँ सिद्धार्थ ने जन्म लिया। जन्म के सातवें दिन उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। अस्तु, सिद्धार्थ का पालन-पोषण माया देवी की छोटी बहन तथा महाराज शुद्धोदन की छोटी रानी महाप्रजापति ने किया। राजकुमार के जन्म के कुछ दिनों पश्चात एक आते बृद्ध ऋषि अस्ति उन्हें देखने आये। उन्होंने स्पष्ट किया कि राजकुमार के शरीर में एक महान आत्मा का निवास है। यह वड़ा होकर एक बहुत बड़े धर्म की स्थापना करके लाखों व्यक्तियों को सांसारिक बन्धनों से छुड़ाकर मुक्ति दिलायेगा। इसका नाम संसार में सदा के लिए अमर रहेगा :-

चार बड़े संकेत और चहुँ ल्याग :- राजकुमार सिद्धार्थ के बड़े होने पर उनका विवाह एक आते सुन्दर राजकुमारी यशोधरा के साथ हुआ। दोनों का वैवाहिक जीवन सुख और ऐश्वर्य से भरपूर था। कुछ समय पश्चात उन्हें एक आते सुन्दर पुत्र ल हुआ। परन्तु विधि के लेश्वे को कौन टाल सकता है। अतः काल के समय गौतम ने चार ऐसे दृश्य देखे जिनसे उनकी जीवनधारा ही बदल गया। उन्होंने बृद्ध मनुष्य, रोगी,

प्रसेनजित आदि अनेक राजाओं, राजकुमारों, सेठ-शाहकारों तथा साधारण वर्ग के व्यक्तियों को बौद्ध मतवलम्बी बनाकर हिरण्यवती नदी के तट पर कुशीनगर के समीप 80 वर्ष की आयु में 483 ई. पूर्ण में उन्होंने "महापरिनिर्वाण" प्राप्त किया। उनके शरीर के भास्म को आठ जातियों ने आपस में बाँट कर उनपर अलग-अलग एक-एक स्तूप बनवाए। कुशीनगर में जिस स्थान पर महात्मा बुद्ध की "महापरिनिर्वाण" प्राप्त हुआ था, वही उनकी एक विशाल मूर्ति की स्थापना की गई। यह मूर्ति आज भी वहाँ विद्यमान है।

बौद्धधर्म के उपदेश :- इस समय की धार्मिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए बुद्ध को व्यावहारिक सुधारक कहा जा सकता है। गौतम बुद्ध ने "मध्यम प्रतिपदा" या "मध्यम मार्ग" को अपने उपदेश का आधार बनाया। यह मार्ग न बहुत कठिन है और न बहुत सरल, आपस में, यह कल्याणकारी मार्ग है। इन्होंने मनुष्य के वंश और ज्ञान पर नहीं, बल्कि कर्म पर विशेष धन दिया। यह बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय के सिद्धांत में विश्वास रखते थे। इन्होंने आत्मा तथा परमात्मा जैसे विवादग्रस्त विषयों में न पड़कर संसार की समस्याओं की बुलझाने तथा दुःख से छुटकारा पाने के उपायों को बताया।

भौतिक शिक्षाएँ (चार आर्यसत्य) :- गौतम बुद्ध ने चार आर्यसत्यों तथा अष्टांगिक मार्ग पर चलने का उपदेश दिया।

चार आर्य सत्य :- (i) संसार में दुःख ही दुःख है :- यह संसार दुःखमय है। (ii) दुःख की जन्मी तृष्णा है :- तृष्णा के कारण ही अइंकार, ममता, शग-द्वेष, कलह आदि उत्पन्न होते हैं और यह दुःख का कारण होता है। (iii) तृष्णा के नाश से दुःख का नाश सम्भव है :- तृष्णा का अंत ही जाने पर मानव दुःखरहित हो जाता है। (iv) तृष्णा का नाश आध्यात्मिक मार्ग से संभव है।

गौतम बुद्ध ने बताया कि दुःख से मुक्ति मिलने के बाद प्राणी को निर्वाण की प्राप्ति होती है। इसके लिए आध्यात्मिक मार्ग पर चलने को कहा गया है :-

1. सम्यक् दृष्टि :- बुद्ध ने चार आर्य सत्तों की घोषणा की थी, अर्थात् दुःख का कारण दुःख का हमन तथा दुःख के हमन के उपाय। इन चार आर्य सत्तों का श्रान प्राप्त करना सम्यक् दृष्टि कहलाता है।

2. सम्यक् संकल्प :- सभी प्रकार के भोग-विलास और सांसारिक सुखों की कामनाओं का त्याग करना तथा अपने आपको सुधारने का संकल्प करना सम्यक् संकल्प कहलाता है।

3. सम्यक् वाक् :- हमेशा सत्य बोलना और अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर झूठ बोलने से बचना ही सम्यक् वाक् अथवा सम्यक् वचन कहलाता है। किसी की निन्दा न करने, कठोर वचनों का न प्रयोग न करने और अपशब्दों को मुख से न निकालने से सम्यक् वाक् के पालन में बड़ी सहायता मिलती है।

4. सम्यक् कर्मात्तः : — इसका तात्पर्य शुभ कर्म करना है। मनुष्य को अच्छे-है-अच्छे काम करना चाहिए और बुरे तथा निन्दनीय कर्मों जैसे-चोरी, जुआ खेलना आदि का त्याग कर देना चाहिए।

5. सम्यक् आजीवः : — मनुष्य को अपनी जीविका कमाने में पूर्णरूप से ईमानदारी का व्यवहार करना चाहिए। जीविका कमाने समय ऐसे कर्मों से बचना चाहिए, जिनसे दूसरों की शानि पहुँचने की सम्भावना हो और जिनमें हिंसा का भी मिश्रण हो।

6. सम्यक् व्यायामः : — सम्यक् व्यायाम का तात्पर्य सम्यक् उद्योग से है। मनुष्य को कुविचारों और दूष्ट प्रवृत्तियों के हमन और सद्विचारों एवं सद्वृत्तियों को पुष्ट्यत तथा पल्लवित करने के लिए सदा सद्प्रयोग करते रहना चाहिए।

7. सम्यक् स्मृतिः : — इसका तात्पर्य उन सभी अच्छी-अच्छी बातों की याद रखना है, जिन्हें कोई महात्मा बुद्ध के उपदेशों द्वारा ग्रहण कर चुका है। उसे अपने मन, वचन, कर्म और कार्य पर सतक ध्यान रखनी चाहिए, जिससे वह पथ-भ्रष्ट न हो सके।

8. सम्यक् समाधिः : — इसका मतलब यह है कि मन को सकाग्र कर ब्रह्म में लीन होना ही परमानन्द की प्राप्ति है। इसकी चार अवस्थाएँ हैं। इन चार अवस्थाओं को पार करके ही मनुष्य निर्वाण अथवा मोक्ष प्राप्त कर सकता है। बौद्ध धर्म सदा विचारों के प्रति सतक रहना ही मोक्ष धर्म है।

गौतम बुद्ध ने अपने उपदेशों में आचरण पर भी बल दिया है। उन्होंने इस आचरणों का पालन आवश्यक बताया है : —

- (i) अहिंसा (ii) सत्य (iii) अस्तेय (चोरी नहीं करना)
- (iv) अपरिग्रह (v) ब्रह्मचर्य (vi) नृत्य-गान का त्याग
- (vii) सुगन्धित वस्तुओं का त्याग (viii) असमय भोजन का त्याग
- (ix) कोमल शय्या का त्याग (x) कामिनी-कॉचन का त्याग।

बौद्ध धर्म ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है। साथ ही, वेदों में भी विश्वास नहीं करता। यह धर्म अनात्मवाद, कर्मवाद और पुनर्जन्म में विश्वास करते हुए ज्ञाने प्रथा का विरोधी है। इस धर्म में अहिंसा को परम धर्म तथा जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य निर्वाण प्राप्ति माना गया है। महात्मा बुद्ध ने अपने उद्देश्य उपदेश सरल तथा साधारण भाषा में दिये तथा वह दार्शनिक जाटिलता से दूर रहे। फलतः इस धर्म का प्रचार द्रुत गति से हुआ।

गौतम बुद्ध ने कठिन तपस्या पर जोर दिया। उन्हें स्वयं कठिन तप के बाद ही ज्ञान प्राप्त हुआ था। भिक्षुओं के लिए व्रत, शरीर को कष्ट देना तथा गम्भीर ध्यान और मनन आवश्यक।